आईसीएआर जनजातीय उप–योजना के अंतर्गत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

विश्वविद्यालय के कृषि संचार विभाग द्वारा आईसीएआर जनजातीय उप–योजना 2024–25 के अंतर्गत 'दूध से बने मूल्य संवर्धित उत्पादों एवं उनके विपणन के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण' विषय पर दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य उत्तराखंड के जनजातीय क्षेत्रों की महिलाओं को दूध एवं कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन और विपणन की तकनीकों से अवगत कराना था, जिससे वे स्वरोजगार एवं सूक्ष्म उद्यमिता की दिशा में सशक्त होकर आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त कर सकें। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय डा. सुभाष चंद्र द्वारा किया गया। इस अवसर पर निदेशक संचार डा. जे.पी. जायसवाल, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण डा. ए.एस. जीना तथा परियोजना प्रमुख डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल, सहायक प्राध्यापक, कृषि संचार विभाग भी मंच पर उपस्थित रहीं। डा. सुभाष चंद्र ने महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की आवश्यकता है कि महिलाएं केवल पारंपरिक खेती तक सीमित न रहें, बल्कि उपलब्ध संसाधनों और प्रशिक्षण के माध्यम से सूक्ष्म उद्यम प्रारंभ कर समाज में आर्थिक रूप से मजबूत स्थान बनाएं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल तकनीकी ज्ञान देना नहीं है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन में महिलाओं को सक्षम बनाना है। डा. जे.पी. जायसवाल ने विपणन पक्ष पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान युग में केवल उत्पादन पर्याप्त नहीं है, जब तक हम अपने उत्पादों को उपभोक्ता तक सही तरीके से पहुँचा नहीं पाते। डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, स्थानीय मेले और एफपीओ नेटवर्क जैसे साधनों का प्रयोगकर महिलाएं अपने उत्पादों की ब्रांडिंग और बिक्री में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती हैं। डा. ए. एस. जीना ने सरकारी योजनाओं और वित्तीय सहायता पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि भारत सरकार और राज्य सरकार द्वारा अनेक योजनाएं संचालितकी जा रही हैं, जिनसे महिलाएं कम पूंजी में भी व्यवसाय प्रारंभ कर सकती हैं। आवश्यकता केवल सहीमार्गदर्शन की है, जो इस प्रकार के प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने यह भी आश्वस्त किया कि विश्वविद्यालय भविष्य में भी महिलाओं को हाथ पकड़कर मार्गदर्शन देने की नीति पर कार्य करता रहेगा। परियोजना प्रमुख डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल ने प्रशिक्षण की विस्तृत रूप–रेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों को न केवल लस्सी, दही, पनीर, आइसक्रीम, मिठाइयाँ आदि उत्पादों के निर्माण की तकनीकी जानकारी दी गई, बल्कि उन्हें उत्पाद की पैकेजिंग, गुणवत्ता मानक, ब्रांडिंग, विपणन रणनीतियां और ग्राहक संवाद जैसे व्यावसायिक कौशलों से भी अवगत कराया गया। प्रत्येक प्रतिभागी को हैंड्स–ऑन प्रशिक्षण के माध्यम से उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया में सहभागी बनाया गया, जिससे उन्हें व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण के अंत में महिलाओं को उनके भविष्य के प्रयासों में सहयोग हेतु आवश्यक सामग्री जैसे बाल्टियाँ, डिब्बे, चीनी, हैंडबैग आदि का वितरण भी किया गया, जिससे वे अपने व्यवसायिक प्रयासों की शुरुआत सुगमता से कर सकें। इस प्रकार के कार्यक्रम न केवल जनजातीय महिलाओं में उद्यमिता और आत्मनिर्भरता की भावना को प्रबल करते हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान करते हैं। आईसीएआर जनजातीय उप–योजना के अंतर्गत संचालित यह प्रशिक्षण कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण और वित्तीय समावेशन की दिशा में एक सार्थक और प्रेरणादायक पहल सिद्ध हुआ।